



शब्द शक्ति की परिभाषा

शब्द में अर्थ सूचित करने की क्षमता को ही शब्द - शक्ति कहा जाता है। शब्दशक्ति में शब्द के ऐसे व्यापार पर विचार किया जाता है, जो शब्दार्थ बोध में सहायक होता है। इस प्रकार जिस शक्ति के द्वारा शब्द में अन्तर्निहित अर्थ को स्पष्ट करने अथवा ग्रहण करने में सहायता मिलती है उस माध्यम को शब्द शक्ति कहते हैं।



शब्दशक्ति (अभिधा, लक्षणा और व्यंजना)

किसी भी कथन में शब्द ओर अर्थ का होना अनिवार्य होता है। शब्दविहीन अर्थ ओर अर्थविहीन शब्द की कल्पना साहित्य में नहीं की जा सकती। सार्थक शब्दों द्वारा ही साहित्यकार अपने विचारों, भावनाओं, कल्पनाओं, अनुभूतिओं को वाणी देता है। संसार का प्रत्येक कार्य किसी न किसी शक्ति के द्वारा संपन्न होता है, यह विज्ञान का अटल नियम है। इसी नियम के अनुसार शब्द भी अपना कार्य, अर्थात् अर्थ देने का कार्य जिस शक्ति के द्वारा सम्पादित करता है, उस अर्थबोध करानेवाली शक्ति को शब्दशक्ति कहा जाता है। परिभाषासंस्कृत काव्यशास्त्रियों ने - "शब्दार्थ सम्बन्ध शक्ति" कहकर शब्दशक्ति को परिभाषित किया है। इसके अनुसार - " शब्द के जिस व्यापार से इसके किसी अर्थ का बोध होता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं। "



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. किसी शब्द की व्याख्या करने से भी उसका अर्थ ज्ञात हो जाता है। जैसे - 'नीलकमल' की यदि यह व्याख्या की जाये कि 'गीले कमल के समान नेत्रों वाला' तो श्रोता तुरन्त इसका अर्थ (कृष्ण) समझ जायेगा। ये ही आठ कारण आचार्यों ने बताये है जिनके द्वारा संकेतित या मुख्य अर्थ का बोध होता है



हिंदी में भी शब्दशक्ति की परिभाषा कुछ इस तरह दिखाई देती है- "वाक्य में प्रयुक्त सार्थक शब्द के अर्थ-बोधक व्यापार के मूल कारण को शब्दशक्ति कहते हैं।
जैसे - 'सूर्य अस्त हो गया।'



इसका सामान्य अर्थ है कि जो सूर्य सुबह उदय हुआ था, वह अब डूब गया है। संध्या काल में कुछ लोग विशेष प्रकार के कार्य के आदि होते हैं। जैसे - किसान- मजदूर खेत में काम बंद करते हैं, तो कुछ लोग संध्या समय पूजा-वंदन करते हैं। अतः इस वाक्य का अर्थ अपनी सुविधा, रुचि और क्रिया व्यापार के अनुसार लगाया जाएगा कि अब काम बंद करना चाहिये, अब संध्या-वंदना या आरती करनी चाहिए, अब सैर करनी चाहिए या फिर संध्या हो जाने के कारण अँधेरा हो गया है, अब दीप आदि प्रकाश की व्यवस्था करनी चाहिए।



स्पष्ट है कि एक ही शब्द समूह या वाक्य अनेक प्रकार के अर्थ अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। एक ही वाक्य में यहाँ तीन भिन्न अर्थों को भी ग्रहण किया गया है- एक सामान्य शब्द वाचक अर्थ, दूसरा लक्षणों से प्रकट होनेवाला अर्थ, तीसरा विभिन्न रुचियों से संयत क्रिया व्यापारों को व्यक्त करनेवाला अर्थ।



शब्द शक्ति

1. शब्द शक्ति की परिभाषा : -

- I. किसी भी शब्द में अंतरनिहित अर्थ को प्रकट करने वाले व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं।
- II. जिस शब्द को समझाने के लिए जिस शक्ति का प्रयोग करते हैं, उसे शब्द शक्ति कहते हैं।



- III. जो हमें तुरंत समझ में नहीं आता है उसे अलग तरीके से समझने के लिए जिस शक्ति का प्रयोग करते हैं, उसे हम शब्द शक्ति कहते हैं।
- IV. शब्द के अर्थ का बोध करने वाले शक्ति को शब्द शक्ति कहते हैं।



शब्द के तीन भेद होते हैं

वाचक (वाच्यार्थ)

लक्षक (लक्ष्यार्थ)

व्यंजक (व्यंग्यार्थ)

इन्हीं पर आधारित अर्थ भी तीन प्रकार का होता है



जो शब्द प्रत्यक्ष रूप से संकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं और उनके अर्थ को वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते हैं।

वाचक शब्दों के चार भेद होते हैं जातिवाचक, गुणवाचक, क्रियावाचक और द्रव्यवाचक। जो शब्द स्ववाच्य समस्त जाति का बोध कराता है, उसे जातिवाचक कहते हैं। जो शब्द विशेषण का कार्य करता है उसे गुणवाचक कहते हैं। जो शब्द क्रिया को निमित्त मानकर प्रवृत्त होते हैं, वे क्रियावाचक कहलाते हैं और जिनसे केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक शब्द कहते हैं।



जो शब्द प्रत्यक्ष रूप से संकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं और उनके अर्थ को वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते हैं।

वाचक शब्दों के चार भेद होते हैं जातिवाचक, गुणवाचक, क्रियावाचक और द्रव्यवाचक। जो शब्द स्ववाच्य समस्त जाति का बोध कराता है, उसे जातिवाचक कहते हैं। जो शब्द विशेषण का कार्य करता है उसे गुणवाचक कहते हैं। जो शब्द क्रिया को निमित्त मानकर प्रवृत्त होते हैं, वे क्रियावाचक कहलाते हैं और जिनसे केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक शब्द कहते हैं।



अभिधा शब्द शक्ति की परिभाषा

Abhidha Shabd Shakti Ki Paribhasha

” अभिधा को ‘ शब्द की प्रथमा शक्ति ‘ भी कहा जाता है । ”

परिभाषा – अभिधा का अर्थ है – नाम , अतः वक्ता द्वारा बोले गये शब्द के साधारण एवं व्यवहारिक अर्थ को धारण करने वाली शक्ति को ‘ अभिधा शक्ति ‘ कहा जाता है ।



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

Abhidha Shabd Shakti Kise Kahate Hain

किसी शब्द के मुख्यार्थ का, वाच्यार्थ का , संकेतित अर्थ का या अभिधेय अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति , अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है ।



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

अभिधा शब्दशक्तिजिस शब्द शक्ति से संकेतित या मुख्य अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा। अभिधा शब्द शक्ति से संकेतित अर्थ किन आधारों से ग्रहण किया जाता है, इस पर आचार्यों ने विस्तार से विचार किया है। यह आधार निम्नलिखित है-



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. **व्याकरण** - व्याकरण के द्वारा प्रतिपादित प्रकृति - प्रत्यय के द्वारा अर्थ का सहज ही बोध हो जाता है। जैसे - लोहार, लुहारिन आदि।
2. **उपमान** - उपमान का अर्थ है, समानता। यदि किसी को यह ज्ञान है कि भीम बहुत खाता था तो इस समानता के आधार पर यह इस वाक्य का ' राम भीम के समान खाता है' तुरंत यह अर्थ समझ जायेगा कि राम बहुत खाने वाला है।



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. **कोश** - कोश से भी अभिधा शब्दशक्ति द्वारा व्यक्त संकेतित अर्थ का बोध होता है। यथा 'देवासुर संग्राम में निर्जरी ने विजय पाई इस वाक्य में प्रयुक्त 'निर्जर' शब्द का अर्थ 'देवता' कोश से ही निकलता है, क्योंकि अमरकोश में देवता का एक पर्यायवाची 'निर्जर' भी है।
2. **4. आप्तवाक्य** - आप्त का अर्थ है प्रामाणिक या लोक - प्रसिद्ध । जैसे- यदि किसी बालक को बता दिया जाये कि यह राम का चित्र है तो यह राम की प्रतिकृति का संकेत उस चित्र में समझ लेता है।



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. जैसे- यदि किसी बालक को बता दिया जाये कि यह राम का चित्र है तो यह राम की प्रतिकृति का संकेत उस चित्र में समझ लेता है।

5. व्यवहार - व्यवहार ही वस्तुओं और उनके वाचक का संबंध जानने के लिए प्रमुख तथा व्यापक कारण है। जैसे - यदि किसी मनुष्य को गाय लाने के लिए कहा जाये और यह गाय ले आये तो उसे देखकर बालक को भी यह ज्ञान हो जाता है कि इस प्रकार के प्राणी को गाय कहते हैं



अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

1. प्रसिद्ध पद का सानिध्य - प्रसिद्ध पद या शब्द के साथ प्रयुक्त होने से भी किसी शब्द के संकेतित अर्थ का बोध होता है।
2. 7. वाक्यशेष - ज्ञात वाले पद की सहायता से अज्ञात पद का अर्थ भी ज्ञात हो जाता है। जैसे यदि किसी को उमापति का अर्थ ज्ञात है तो वह अज्ञात 'उमापति' पद का अर्थ निकाल लेगा।
3. 8. विवृत्ति - विवृत्ति का अर्थ है विवरण, टीका या व्याख्या।



लक्षणा शब्द शक्ति

लक्षणा शब्दशक्तिमुख्यार्थ का बोध होने पर रूढि प्रयोजन के द्वारा मुख्य अर्थ से संबंध रखने वाला अन्य अर्थ जिस शब्द शक्ति से लक्षित होता है, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं। लक्षणा शब्द शक्ति के इस लक्षण का विश्लेषण करने पर लक्षणा के तीन अंग मिलते हैं। ✓✓

लक्षणा के भेद - रूढि और प्रयोजन की दृष्टि से लक्षणा के दो भेद होते हैं- १. रूढि लक्षणा, 2. प्रयोजनवती लक्षणा।



१- रूढ़ि लक्षणा जिस लक्षणा में रूढ़ि के कारण मुख्यार्थ को छोड़कर उससे संबंध रखने वाला लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, उसे रूढ़ि लक्षणा कहते हैं। यथा डिगलत पानि डिगुलात गिरि, लखि सब ब्रज बेहाल। कौपि किसोरी दरस ते, खरे लजाने लाल यह वर्णन उस समय का है, जब ब्रज वासियों की रक्षा के लिए कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाया था। उस समय ब्रज के जिन लोगों ने उस पर्वत के नीचे आश्रय लिया था, उनमें राधा भी थी राधा को देखकर प्रेम के कारण कृष्ण के शरीर में कंपन सात्विक भाव उत्पन्न हुआ। जिसके कारण उनका हाथ कांपने लगा था।



२. प्रयोजनवती लक्षणा : जहाँ मुख्यार्थ का बोध होने पर किसीविशेष प्रयोजन के कारण में मुख्यार्थ से संबंध रखने वाले लक्ष्यार्थ का बोध होता है, वहाँ प्रयोजनवती लक्षणा होती है।
यथा - उदित उदयगिरि - मंच पर रघुवर बाल - पतंगा बिगसे संत - सरोज सब, हरषे लोचन - भृंग॥ इस दोहे में समय का वर्णन किया गया है, जब जनकपुरी में धनुष यज्ञ के अवसर पर राम धनुष को भंग करने के लिए अपने स्थान से उठे। अर्थ है - उदयाचल रूपी मंच पर से सूर्य रूपी राम उदित हुए, जिन्हें देखकर कमल रूपी संत खिल उठे और भौरं रूपी नेत्र हर्षित हो गए। यहा भगवान राम को बाल पतंग (प्रातः कालीन सूर्य) कहने में मुख्यार्थ का बोध है। अंतः इसका लक्ष्यार्थ है- भगवान राम की प्रभा (प्रातः कालीन सूर्य) की प्रभा के समान प्रेरणा देने वाली और चमकने वाली है। यहाँ प्रयोजनवती लक्षणा है।



व्यंजना शब्द शक्ति

व्यंजना शब्दशक्ति अभिधा और लक्षणा शब्दशक्तियाँ जब अपने - अपने अर्थों का बोध कराके शांत हो जाती है, तब जिस शब्दशक्ति से व्यंग्यार्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्दशक्ति कहते हैं।

विरतास्वभिधाद्यासु यमाऽर्थो बोध्यते परः। सा वृत्तिव्यंजनाना शब्दस्यार्थादिकस्य चाव्यंग्यार्थ को ध्वन्यार्थ, सूच्यार्थ, आक्षेपार्थ और प्रतीयमानार्थ भी कहते हैं, क्योंकि यह वाच्यार्थ की भाँति न तो कथित होता है और न लक्ष्यार्थ की भाँति लक्षित होता है, यह व्यंजित, ध्वनित, सूचित, आक्षिप्त या प्रतीत होता है।



व्यंजना के भेद व्यंजना के दो भेद होते हैं

- १-शाब्दी व्यंजना और २ - आर्थी व्यंजना। १.- शाब्दी व्यंजना –
- जहाँ व्यंग्यार्थ किसी विशेष शब्द के आधार पर अवलम्बित हो, अर्थात् उस व्यंजक के स्थान पर उसका समानार्थक शब्द रख देने से व्यंग्यार्थ की प्रतीति न हो तो उसे शाब्दी व्यंजना कहते हैं। शाब्दी व्यंजना के दो भेद होते हैं -
अभिधामूला शाब्दी व्यंजना और लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना।



२.- आर्थी व्यंजना-

वक्तू, बोधव्य, काकु, वाच्य, वाक्य, अन्यसन्निधि, प्रस्ताव, देश, काल, और चेष्टा के वैशिष्ट्य से जिस शब्द - शक्ति द्वारा व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है, उसे आर्थी व्यंजना कहते हैं। यथा - कित्ती न गोकुल कुल - बधू, काहि न किहि सिख दीन।
कौने तजी न कुल गली, है मुरली - सुर लीन।



मुरली की ध्वनि सुनकर श्रीकृष्ण के पास जाकर लौटी हुई किसी गोपी का अपनी सखी के प्रति यह कथन है। इसमें तीन बातें हैं - ' कितनी न गोकुल कुल बधू- गोकुल में कितनी कुलांगनाये नहीं है, अर्थात् गोकुल में सभी कुलांगनायें है।' काहि न किहि सिख दीन ' - किसने किसको शिक्षा नहीं दी अर्थात् सभी ने सभी को शिक्षा दी है कि कुल - लाज को छोड़कर कृष्णा की मुरली की ध्वनि सुनकर उनके पास दौड़ जाना कुलांगनाओं को शोभा नहीं देता । ' कौने तजी न कुल - गली' - किसने कुल की मर्यादा नहीं छोड़ी अर्थात् सभी ने कुल की मर्यादा छोड़ दी है।



'कौने तजी न कुल - गली' - किसने कुल की मर्यादा नहीं छोड़ी अर्थात् सभी ने कुल की मर्यादा छोड़ दी है। इस प्रकार काकुवैशिष्ट्य के द्वारा इस दोहे का यह अर्थ निकलता है कि तू जो अब मुझे उपदेश दे रही है, क्या कभी मुरली की मनोहर ध्वनि को सुनकर और मेरी - जैसी दशा को प्राप्त करके ऐसी अनेक शिक्षाओं के मिलने पर भी तू भी तो अपनी कुल - मर्यादा को छोड़कर कृष्ण के पास पहुँच जाया करती थी।



आचार्य मम्मट के अनुसार –

” स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो
व्यापारोऽस्याभिधोच्यते । । ”

अर्थात् ” साक्षात् संकेतिता (गुण , जाति, द्रव्य तथा
क्रियावाचक) अर्थ जिसे मुख्य अर्थ कहा जाता है , उसका
बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा व्यापार या अभिधा
शब्द शक्ति कहा जाता है । ”



अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण

हरि पुस्तक पढ़ रहा है।

खेत में गाय चर रही है।

उसके हार के मोती किमती है।

गाय दुध देती है।

राम एक शरारती बच्चा है।



अभिधा शब्द शक्ति के भेद/प्रकार

अभिधा शक्ति के द्वारा तीन प्रकार के शब्दों का अर्थ बोध होता है –

1. रूढ़ शब्द
2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द



रूढ़ शब्द की परिभाषा

1. रूढ़ शब्द – वे शब्द जिनके खंड न हो , सम्पूर्ण शब्दों का एक ही अर्थ प्रकट हो , उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है । ये शब्द जातिवाचक होते है ।
जैसे – लता , नदी , पर्वत , तोता , कबूतर , बालक , हाथी , बंदर , घोड़ा आदि ।



यौगिक शब्द की परिभाषा

2. यौगिक शब्द – वे शब्द जिनका अर्थ बोध अवयवों (प्रकृति और प्रत्ययों) की शक्ति के द्वारा होता है , यौगिक शब्द कहलाते है ।
अर्थात् जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बने होते है तथा जिनके प्रत्येक खण्ड का कोई अर्थ होता है , यौगिक शब्द कहलाते है ।
जैसे – देशवासी , प्रभाकर , दिवाकर , सुधांशु , पाठशाला , डाकघर आदि ।



3. योगरूढ़ शब्द — ये शब्द ” रूढ़ और यौगिक ” दोनों शब्दों से मिलकर बने होते हैं।

सामान्यतः ये शब्द यौगिक होते हैं परंतु एक विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं।

अर्थात् जब यौगिक शब्द अपने सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ बताने लगें, तो वे ” योगरूढ़ शब्द ” कहलाते हैं।

जैसे — लम्बोदर (गणेश भगवान)

पंकज (कमल)

उपर्युक्त वाक्यों में ” लम्बोदर ” दो शब्दों ‘ लम्बा + उदर ’ से मिलकर बना है तथा इसके लिये रूढ़ शब्द ” गणेश ” हो जाएगा, जो एक अलग अर्थ प्रकट कर रहा है, अतः यह एक योगरूढ़ शब्द है।



अभिधा शब्द शक्ति का महत्व –

◆ ” अभिधा ” शब्द शक्ति की प्रथम शक्ति है , जो शब्दों के शब्दकोशीय अर्थ का बोध कराती है । इसमें शब्द का सामान्य अर्थ में प्रयोग किया जाता है , यह शब्द के सांकेतित अर्थ को प्रकट करती है ।

◆ कवि ” देव ” ने अभिधा शक्ति को उत्तम काव्य कहा है , उन्होंने शब्द शक्ति के लिए एक वाक्य दिया है –

” अभिधा उत्तम काव्य है , मध्य लक्षणा लीन ।

अधम व्यंजना रस कुटिल , उलटी कहत कवीन ।। ”



शब्द के भेद –

शब्द में तीन अर्थ निहित रहते हैं या शब्द केक अर्थ तीन प्रकार के हो सकते हैं –

- I) वाच्यार्थ : - जो शब्द सीधा सांकेतिक अर्थ प्रकट करे, उसे वाचक शब्द और उसके अर्थ को वाच्यार्थ कहते हैं। इसे मुख्यार्थ भी कहते हैं।
- II) लक्ष्यार्थ :- जब शब्द अपने वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ देता है तो उस अर्थ को लक्ष्यार्थ कहते हैं।



उदाहरण :-

‘तुम तो निरे गधे हो’

इसमें ‘गधा’ शब्द का तात्पर्य चार पैरों वाले पशु से नहीं है।

III. व्यंग्यार्थ :- जहाँ शब्दार्थ में व्यंग्य का भाव छिपा रहता है, उसे व्यंजक शब्द और उस अर्थ को व्यंग्यार्थ कहा जाता है। यह अभिधा और लक्ष्यार्थ से भावों की स्थिति है।



शब्द – शक्तियों के भेद -

शब्द के अर्थ के आधार पर शब्द – शक्तियों के तीन रूप माने गए -

- I. अभिधा शब्द - शक्ति
- II. लक्षणा शब्द – शक्ति
- III. व्यंजना शब्द – शक्ति



(I) अभिधा शब्द – शक्ति : -

जो शब्द पढ़ते ही हमें उसका अर्थ जल्दी समझ में आ जाता है, उसे हम अभिधा कहते हैं।

उदहारण : -

- I. राम जा रहा है।
- II. सीता दोड़ रही है।
- III. राम खा रहा है।



अभिधा तीन प्रकार के है –

- I. रूढ
- II. यौगिक
- III. योगरूढ

I. रूढ : - जो शब्द परम्परा से प्रचलित है जिनमें प्रत्यय आदि जोड़कर परिवर्तन नहीं होता, जिनके खण्ड भी नहीं हो सकते, अतः इनका अर्थ सर्वमान्य प्रचलित अर्थ होता हैं।

उदाहरण :- आँख, वृक्ष



II. यौगिक :- ये शब्द दो शब्दों के योग से बने होते हैं। ये अपने मूल अर्थ से दूसरे अर्थ को भी प्रकट करते हैं। यौगिक का अर्थ है 'मिलाया हुआ'।

उदाहरण :-

- a) विधा + आलय - विद्यालय
- b) राकेश - राका + ईश (रात्रि का ईश)



III. यौगरूढ़ : - ऐसे शब्द जो साधारण अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ ग्रहण करे, उसे यौगरूढ़ कहते हैं।

उदाहरण :-

- a) जलज (जल + ज) जल में जन्म लेने वाला, पर रूढ़ि के आधार पर इसका अर्थ कमल से ही लिया जाता है।
- b) नीलकंठ – शिव जी के लिए प्रयोग क इया जाता है।
- c) प्रेमचंद – उपन्यास का सम्राट



2. लक्षणा :-

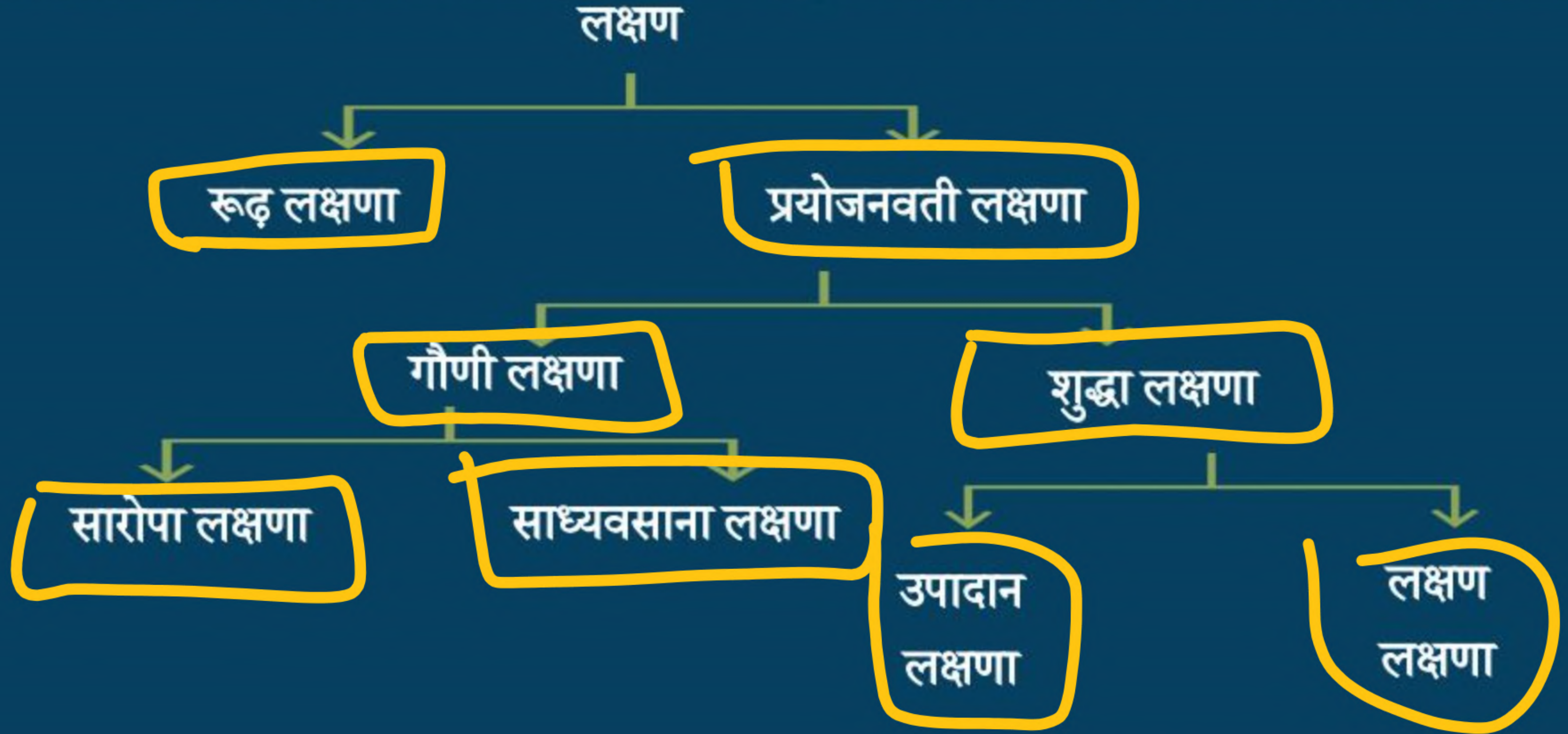
- I. जब हम कुछ शब्द पढ़ते हैं उसके अर्थ को समझने में बाधा उत्पन्न होती है, उसे लक्षणा कहते हैं।
- II. इसमें मुहावरे का प्रयोग किया जाता है।

III. लक्षणा के दो भेद होते हैं -

- a) रूढ़ ✓
 - b) प्रयोजनवती ✓
- रूढ़ – राजस्थान वीर है।
- प्रयोजनवती – गंगा पर गाँव है।

I. नीलकंठ

शिव ✓
प्रती





(IV) प्रजोजनवती लक्षणा के दो भेद होते हैं –

A. गौणी लक्षणा

B. शुद्ध लक्षणा

A. गौणी लक्षणा – जहाँ समान गुण – धर्म के आधार पर लक्ष्यार्थ प्राप्त किया जाता है वहाँ गौणी लक्षणा होती है।

उदाहरण :- कर – कमल में,

कर (हाथ) का सादृश्य कमल से दिखाया गया है। यहाँ गौणी लक्षणा है।



B शुद्ध लक्षणा :- जहाँ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में कोई समानता न हो, अपितु उनमें सादृश्य से भिन्न सम्बन्ध हो वहाँ शुद्ध लक्षणा होती है।

उदाहरण : सवारियाँ बैठ जाय

यहाँ सवारियों का अर्थ किया सवारी से न होकर वास्तव में सर्व अहोने वाले लोगों से है। यहाँ शुद्ध लक्षणा है।



V. गौणी लक्षणा के दो भेद होते हैं –

A. → सारोपा लक्षणा

B. साध्यवसाना लक्षणा

A. सारोपा लक्षणा – जब उपमेय पर उपमान का आरोप हो तो उस में उपमेय और उपमान दोनों अपने आप आ जाते हैं। ऐसी स्थिति में वहाँ लक्षणा होता होती है

उदाहरण : - ‘विश्वनाथ कुलभूषण हैं’

इस वाक्य में विश्वनाथ भी है जिस पर आरोप किया गया है और भूषण भी है जो विश्वनाथ पर आरोपित हुआ है।



B. साध्यवसाना लक्षणा – इस लक्षणा में आरोप का विषय लुप्त रहता है, अर्थात् उसका उल्लेख शब्दों द्वारा नहीं किया जाता, उसे साध्यवसाना लक्षणा कहते हैं।

उदाहरण : - ‘लातों के भूत बातों से नहीं मानते।’

यहाँ ‘लातों के भूत’ धृष्ट और ढीठ व्यक्तियों के लिए कहा गया है, किन्तु उनका अलग – अलग उल्लेख नहीं किया गया है, परन्तु ‘लातों के भूत’ (उपमान) में ही वे धृष्ट और ढीठ व्यक्ति (उपमेय) अध्यवसित हैं।



(VI) शुद्ध लक्षणा के दो भेड़ होते हैं –

A. उपादान लक्षणा

B. लक्षण लक्षणा

A. उपादान लक्षणा – उपादान अर्थात् सामग्री । जहाँ पर मुख्यार्थ बना रहे और अपनी कार्य – पूर्ति के लिए अन्य अर्थों का भी ग्रहण करें वहाँ उपादान लक्षणा होती है ।



उदाहरण :- द्वारा रखाना

यहाँ यह अर्थ नहीं कि केवल द्वार पर ही बैठा रहे, परन्तु पूरे घर और उसके आसपास की भी रखवाली करें। 'यहाँ घर की रखवाली' अर्थ के साथ पूरे घर की रखवाली वाला अन्य भी निकलता है। यहाँ उपादान लक्षणा है।



B. लक्षणा लक्षणा :- जहाँ, लक्ष्यार्थ को सिद्ध करने के लिए मुख्यार्थ अपने को मिटा दे वहाँ लक्षण लक्षणा होती है। इसमें मुख्यार्थ छिपा रह जाता है, उसका कोई अर्थ नहीं होता।

उदाहरण :- काको मन बांधे न यह जूरा बांधान हार।



3. व्यंजना :-

अभिधा और लक्षणा द्वारा जब किसी अर्थ का बोध नहीं हो पाता तो उस स्थिति में जिस तीसरी शब्द – शक्ति द्वारा अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द – शक्ति कहते हैं।



कार्य प्रयोजन

काव्य प्रयोजन :-

काव्य – कविता

प्रयोजन – उद्देश्य

काव्य प्रयोजन – काव्य प्रयोजन का अर्थ काव्य रचना का उद्देश्य है।

प्रयोजन बिना तु मंदो अपिना प्रवर्तते

अर्थात् कोई भी कार्य बिना प्रयोजन (उद्देश्य) के नहीं किया जा सकता है।



- I. काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है और किस उद्देश्य से पढ़ा जाता है, इसे दृष्टिगत रखकर काव्य प्रयोजनों पर कवि और पाठक की दृष्टि से विस्तृत विचार विमर्श काव्य शास्त्र में किया गया है।
- II. काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से अलग है। क्योंकि काव्य प्रेरणा का अभिप्राय है काव्य की रचना के लिए प्रेरित करने वाले तत्व, जबकि काव्य प्रयोजन का अभिप्राय है काव्य रचना के बाद में प्राप्त होने वाले लाभ।



संस्कृत के आचार्य का इस प्रयोजन के लिए मत:-

- I. आचार्य भरतमुनि के अनुसार उनका जो ग्रंथ है वह 'नाट्यशास्त्र' हैं।
- II. भरतमुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में लिखा है –
धर्म यस्यस्य आयुश्यम हितम् बुद्धि विवर्धनम्
लोकपदेश जनन्म नाट्य मेतद भविष्यति



एक नाटक (नाट्यकाव्य) लेखन के निम्न छः प्रयोजन माने हैं

:-

1. धर्म
2. यश
3. आयु
4. हित
5. बुद्धि का विकास
6. लौकिक ज्ञान



II. दुःखार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम्
विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद भविष्यति

अर्थात् दुखार्थ श्रमार्थ एवं शोकार्थ व्यक्ति को सुख
और शांति की प्राप्ति ही काव्य लेखन का प्रयोजन माने है।



2. भामह :-

- I. आचार्य भामह के ग्रंथ का नाम 'काव्यालंकार' है।
- II. उन्होंने अपने इस ग्रंथ में लिखा है –

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।

करोति प्रीति कीर्ति च साधुकाव्य निबन्धनम्

अर्थात् आचार्य भामह ने काव्य के निम्न प्रयोजन स्वीकार किए हैं -



- I. धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की प्राप्ति होना।
- II. कलाओं में निपुणता प्राप्त करना।
- III. कीर्ति (यश) प्रीति (आनंद) की प्राप्ति होना काव्य प्रयोजन कहलाता है।



3. आचार्य मम्मट :-

I. आचार्य मम्मट के ग्रन्थ का नाम 'काव्यप्रकाश' है।

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।

सद्यः परनिर्वृत्रये कांतासम्मितत्योपदेशयुजे ॥

- A. यश – प्राप्ति (यश से)
- B. अर्थ की प्राप्ति (अर्थकृते)
- C. लोकव्यवहार का ज्ञान (व्यवहार विदे)
- D. अनिष्ट (शिवेतर) का निवारण (क्षतये)
- E. आत्मशांति
- F. कांतासम्मित उपदेश



- A. यश – प्राप्ति – काव्यलेखन से कवि को यश प्राप्त होता है और वह सादा के लिए अमर हो जाता है।
- B. अर्थ प्राप्ति – काव्य लेखन से कवि को अर्थ अर्थात् कवि को धन की प्राप्ति होती है।
- C. लोक व्यवहार का ज्ञान – इसका संबंध पाठकों से है अर्थात् एक श्रेष्ठ काव्य के पठान से पाठकों को मानवोचित शिक्षा प्राप्त होती है।



D. अनिष्ट का निवारण – शिवेतर का अर्थ हुआ अमंगल और क्षतये का अर्थ हो गया विनाश । अर्थात् काव्य लेखन से कवि के एवं काव्य के पठन से पाठक के अनिष्ट का निवारण होता है ।

E. आत्मशांति – इसका संबंध मुख्यतः पाठक से हैं अर्थात् काव्य पठन से पाठक को पढ़ने के साथ ही आनंद का अनुभव होता है और उसे परमशांति की प्राप्ति होती है ।



- F. कांतासम्मित उपदेश – यह उपदेश तीन प्रकार के माने जाते हैं।
- a) प्रभ सममित उपदेश – ऐसा उपदेश जो हमारे लिए होतकर तो होता है परन्तु रूचिकर नहीं होता। वह प्रभुसम्मित उपदेश कहलाता है।
 - b) मित्रसम्मित उपदेश – यह उपदेश भी होता है और रूचिकर भी परन्तु इसकी अवहेलना भी की जा सकती है।



- c) कांतासम्मित उपदेश – यह उपदेश होतकर भी होता है और रूचिकर ही होता है । तथा इसकी कभी अवहेलना भी नहीं की जा सकती है । काव्य का उपदेश इसी श्रेणी का माना जाता है ।



हिन्दी कवियों का इस प्रयोजन के लिए मत :-

- I. तुलसीदास – तुलसीदास ने ‘स्वान्तः सुखाय’ को साहित्य का उद्देश्य मानते हुए लिखा है :-

स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा

- II. कुलपति मिश्र – आचार्य कुलपति मिश्र ने यश, धन, आनंद और व्यवहार ज्ञान को काव्य का प्रयोजन बताया है।

- III. सोमनाथ – सोमनाथ ने कीर्ति, धन मनोरंजन और उपदेश को काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया है।



IV. मैथलीशरण गुप्त – गुप्त जी काव्य का प्रयोजन केवल मनोरंजन नहीं अपितु उपदेश स्वीकार करते हुए लिखते हैं –

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना – चाहिए ।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए II

V. डॉ. नगेन्द्र – डॉ. नगेन्द्र की दृष्टि में काव्य के मूलतः दो प्रयोजन हैं –

1. आनंद
2. लोकमंगल



VI. डॉ. गुलाबराय – गुलाबराय के मत में रसानन्द ही काव्य का रस है।

VII. प्रेमचंद – साहित्य का उद्देश्य कुमारि अनुभूति की तिब्रता को बढ़ाना है।

VIII. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – शुक्ल ने काव्य प्रयोजनों पर विस्तार से विचार किया है और वे काव्य का प्रमुख प्रयोजन रसानुभूति मानते हैं।



पाश्चात्य चिंतकों का मत है –

1. सुकरांत – इसके अनुसार देवी प्रेरणा काव्य की मूल प्रेरणा है।
2. प्लेटो – प्लेटो लोकमंगल को काव्य का चरम लक्ष्य मानते हैं।
3. अरस्तू – इनके अनुसार कला का विशेष उद्देश्य आनंद है।
4. होरेंस – आनंद और लोककल्याण को ही काव्य का प्रयोजन स्वीकार करते हैं।



5. मैथ्यू आर्नोल्ड – इनकी दृष्टि में जीवन की व्याख्या करना ही काव्य का प्रयोजन है।
6. ड्राइडन – इनके अनुसार स्वान्तः सुखाय और परजनहिताय काव्य के प्रयोजन है।